फाल्गुन-चैत्र 1932 मार्च 2011 खण्ड 23 अंक 03

डीआरडीओ समाचार

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

ई एम बी 1451 वायुयान का अनावरण

डी आर डी ओ, भारतीय वायु सेना, भारतीय दूतावास, तथा मैसर्स एम्ब्रेयर के प्रतिनिधि।

ई एम बी 1451 वायुयान का 21 फरवरी 2011 को एम्ब्रेयर, ब्राजील, में अनावरण किया गया। इस वायुयान की वायुवाहित जल्द चेतावनी तथा नियंत्रण प्रणाली (ए ई डब्ल्यू एंड सी) में सुधार किए गए हैं। इस अवसर पर रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ वी के सारस्वत; डॉ प्रहलाद, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं प्रणाली समेकन); डॉ एस क्रिस्टोफर, निदेशक, कैब्स; एयर मार्शल दलजीत सिंह, अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट मेडल, महानिदेशक (ए ओ), वायु सेना; तथा भारतीय दूतावास एवं मेसर्स एम्ब्रेयर के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

इस अंक में

ई एम बी 1451 वायुयान का अनावरण
निशांत का उड़ान परीक्षण
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
नवीन विकास
टैक्नोलॉजी फोकस का विमोचन
डी आर डी ओ तथा एन पी एस के मध्य समझौता
डी आर डी ओ स्वास्थ्य मेला
भारतीय विज्ञान कांग्रेस 2011 में भागीदारी
राजभाषा गतिविधियां
संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण
पेटेंट अनुमोदित
कार्मिक समाचार
राष्ट्रीय अभिकल्पन पुरस्कार
उच्च अर्हता प्राप्ति
वार्षिक दिवस समारोह
स्वर्ण जयंती समारोह
मानव संसाधन विकास गतिविधियां
ओ पी सी डब्ल्यू प्रतिनिधिमण्डल का
डी आर डी ई, ग्वालियर दौरा
आई एन ए ई फेलोशिप
बायोएक्टिव ग्लासेज फॉर इम्पलांट एप्लीकेशंस
औषधि विकास बैठक
डी आर डी ओ पर्वतारोहण अभियान
डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

निशांत का उड़ान परीक्षण

निशांत के उड़ान परीक्षण का दृश्य।

डी आर डी ओ के मानवरहित वाहन (यू ए वी) निशांत का भारतीय सेना द्वारा चंदन रेंज, पोखरण, में श्रृंखला परीक्षण किया गया। निशांत का अभिकल्पन तथा विकास वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू, द्वारा किया गया है। इसके विकास में रक्षा इलैक्ट्रोनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून ; अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे ; तथा हवाई वितरण अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए डी आर डी ई), आगरा छावनी, ने भी सहभागिता की है।

डॉ प्रहलाद, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं प्रणाली समेकन) ने निशांत के प्रमुख गुणों पर प्रकाश डाला। इसे हाइड्रोन्यूमैटिक प्रक्षेपक से प्रक्षेपित किया जा सकता है, जिसके कारण इसके प्रक्षेपण में किसी प्रकार की हवाई पट्टी की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसे कहीं भी रखा जा सकता है तथा जिस स्थान पर आवश्यकता हो वहां ले जाया जा सकता है। इस प्रणाली में वायु वाहन को भू-नियंत्रण स्टेशन जो कि टाट्रा वाहन पर होता है, पर रखा जाता है। यह 45 घंटे तक उड़ान भर सकता है तथा इसे निर्धारित स्थान पर पुनः प्राप्त किया जा सकता है। धरातल पर आते हुए उसको नुकसान से बचाने के लिए पैराशूट तथा लैंडिंग बैग का उपयोग किया जाता है। निशांत को युद्धक्षेत्र निगरानी, लक्ष्य निर्धारण, तोपखाने की मदद, इत्यादि के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। इस पर इलैक्ट्रो-ऑप्टिकल, इलैक्ट्रॉनिक जासूसी, तथा संचार यंत्रों को स्थापित किया जा सकता है। इसे आतंकवाद विरोधी अभियानों में भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

इन परीक्षणों को सेना द्वारा चार निशांत मानवरहित विमानों को भू-नियंत्रण प्रणाली सहित सेना में सम्मिलित करने से पहले किया गया। परीक्षणों के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल विनोद नयनार, अति विशिष्ट सेवा मेडल, महानिदेशक, तोपखाना; श्री पी एस कृष्णन, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, ए डी ई ; श्री जी शिवसंकरन, परियोजना निदेशक, निशांत ; ए डी ई ; तथा डील के वरिष्ठ वैज्ञानिकगण ; सेना की परीक्षण टीम ; तथा सैन्य यूनिट के प्रयोक्ता प्रतिनिधि उपस्थित थे। निशांत का यह उड़ान परीक्षण सफल रहा।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

महान भारतीय भौतिकीविद् तथा नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक सर सी वी रमन के सम्मान में भारत में हर वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया जाता है। सर सी वी रमन ने 1928 में 28 फरवरी को प्रकाश प्रकीर्णन सिद्धांत (रमन इफेक्ट) की खोज की थी। इसलिए प्रतिवर्ष 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन राष्ट्र के सभी वैज्ञानिक संस्थानों एवं विज्ञान संबंधी विश्वविद्यालयों में समारोह आयोजित किए जाते हैं, तथा विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर व्याख्यान एवं प्रदर्शन किए जाते हैं। इनका उद्देश्य जनसामान्य में विज्ञान के प्रति जागरूकता पैदा करना तथा समसामयिक विज्ञान संबंधी चुनौतियों पर परिचर्चा करना होता है।

मंचासीन (बांये से) श्री अनिल कुमार मैनी, निदेशक, लेसटेक ; डॉ वी के सारस्वत, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ; डॉ दिनेश सिंह, कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय ; तथा डॉ राजीव विज, सचिव, रक्षा विज्ञान फोरम।

रक्षा विज्ञान फोरम, दिल्ली, द्वारा 28 फरवरी 2011 को भगवंतम सभागार, मेटकॉफ हाउस परिसर, दिल्ली, में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में दिल्ली स्थित प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं तथा डी आर डी ओ मुख्यालय से विभूतिगणों ने भाग लिया। इस समारोह में दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति, डॉ दिनेश सिंह ने **भारतीय गणित का इतिहास** विषय पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। समारोह के मुख्य अतिथि रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ वी के सारस्वत थे। समारोह के आरंभ में डॉ ए के मैनी, निदेशक, लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली, ने सभी उपस्थित मुख्य नियंत्रक महोदयों; अध्यक्ष, आर ए सी ; प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के निदेशकगणों, वरिष्ठ वैज्ञानिकगणों, अन्य वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। डॉ सारस्वत ने अपने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस संबोधन में प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाकर प्रौद्योगिकीय विकास करने की आवश्यकता पर बल दिया। आपने बताया कि कैसे विगत में हमारे वैज्ञानिकों ने सुविधाओं की कमी के बावजूद उत्कृष्ट उपलब्धियां प्राप्त कर राष्ट्र को गौरवान्वित किया तथा इसके अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत किए। आपने युवा वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे पर्यावरण, समाज तथा अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन रखने वाली प्रौद्योगिकियों पर कार्य करें। आपने कहा कि जब तक हम आज का विज्ञान नहीं समझेंगे, हम भविष्य की प्रौद्योगिकियां विकसित नहीं कर पाएंगे, इसलिए विज्ञान की उपयुक्त समझ विकसित करने की आवश्यकता है। आपने अपने व्याख्यान में नैनो प्रौद्योगिकी के सर्वव्यापी प्रयोगों पर भी प्रकाश डाला। डॉ सिंह ने इस अवसर पर अपने व्याख्यान में भारतीय गणित के इतिहास पर हड़प्पा संस्कृति से लेकर श्रीनिवास रामानुजन तक प्रकाश डाला। आपने व्याख्यान में बड़े ही रोचक रूप में बताया कि भारतीय हमेशा से ही गणित में अग्रणी रहे हैं आपने कालक्रम में अनेक भारतीय गणितज्ञों के अमूल्य योगदानों के बारे में गूढ़ जानकारी बांटीं, आपने अपने व्याख्यान का अंत श्रीनिवास रामानुजन के गणित के प्रति अगाध समर्पण के प्रसंग से की तथा सभी वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे रामानुजन के व्यक्तित्व से प्रेरणा पाकर अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के प्रयत्न करें। समारोह में दिल्ली-स्थित प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यानकर्ताओं को सम्मानित भी किया गया।

रक्षा विज्ञान फोरम, दिल्ली, द्वारा इस अवसर पर दिनांक 04 फरवरी 2011 को डी आर डी ओ अधिकारियों/कर्मचारियों के सभी वर्गों के लिए राष्ट्रीय विज्ञान दिवस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 3100

से अधिक प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। 09 विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के 11 प्रतिभागियों से 15 फरवरी 2011 को दूरभाष पर प्रश्न पूछे गए तथा उसी के आधार पर विजेताओं का चयन किया गया :

1. डॉ एस वी कामत, वैज्ञानिक जी, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद।
2. श्री हरगोविंद, उपनिदेशक, कार्मिक निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय।
3. श्री सनी मनचंदा, वैज्ञानिक बी, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बैंगलूरू।

रक्षा विज्ञान फोरम, दिल्ली द्वारा इस अवसर पर डी आर डी ओ अधिकारियों/कर्मचारियों के सभी वर्गों के लिए राष्ट्रीय पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। पोस्टर बनाने का विषय था **टैक्नोलॉजी फॉर होमलैंड सेक्योरिटी**। इस प्रतियोगिता के लिए 31 डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से 44 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। निदेशक, सेपटेम ; निदेशक, सीफीज ; निदेशक, लेसटेक ; तथा निदेशक, डी टी आर एल के सदस्यों को सम्मिलित कर एक बोर्ड बनाया गया जिन्होंने इन पोस्टरों का मूल्यांकन किया। मूल्यांकन के आधार पर अंतिम विजेता इस प्रकार रहे :

1. सुश्री अर्चना सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक बी, इलैक्ट्रोनिक्स एवं कम्प्यूटर विज्ञान निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय।
2. श्री विनीत पी आर, वैज्ञानिक बी, नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि।
3. श्री सुमित गोस्वामी, संयुक्त निदेशक, एम आई एस टी निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय।

श्री संजय पाल, वैज्ञानिक एफ, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), दिल्ली को उदार रक्तदाता के रूप में प्रशंसा प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया। आपने आज तक 63 बार रक्त दान किया तथा 16 अगस्त 2010 को रक्षा विज्ञान मंच तथा नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित रक्तदान शिविर में आपने रक्तदान किया।

भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र, दिल्ली द्वारा पहली बार भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र मूल्यांकन के दौरान सर्वोत्तम कार्यनिष्पादन पुरस्कार की घोषणा की गई थी। डॉ ए भट्टाचार्य, वैज्ञानिक एफ, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद को 2010 के मूल्यांकन में 90 अंकों से अधिक के लिए रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार तथा अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

डी आर डी ओ साइंस स्पैक्ट्रम–2011 के विमोचन का दृश्य।

जनसामान्य को विज्ञान के बारे में जागरूक करने के लिए डी आर डी ओ प्रयोगशालाएं/स्थापनाएं भी इस दिन विज्ञान से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं। प्रत्येक प्रयोगशाला/स्थापना से एक वैज्ञानिक अपने कार्यक्षेत्र से संबंधित विषय पर एक व्याख्यान देता है, जिसे उस प्रयोगशाला/स्थापना के निदेशक द्वारा रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार की ओर से एक पदक एवं एक प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है। इस समारोह में दिल्ली-स्थित प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के 12 वैज्ञानिकों को डॉ वी के सारस्वत ने पदक प्रदान किए।

इस दिन मुख्य अतिथि के रूप में पधारे रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ वी के सारस्वत, महानिदेशक, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन एवं सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग ने डेसीडॉक, दिल्ली, द्वारा संकलित एवं संपादित **डी आर डी ओ साइंस स्पैक्ट्रम–2011** का विमोचन भी किया। दिल्ली-स्थित प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के लगभग 800 कार्मिकों ने इस समारोह में भाग लिया। डॉ राजीव विज, सचिव, रक्षा विज्ञान फोरम ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

नवीन विकास

मैक्सो का अनावरण

मैक्सो के अनावरण का दृश्य।

मच्छरों की रोकथाम के लिए नई युक्ति मैक्सो का 14 फरवरी 2011 को फिक्की, नई दिल्ली, में आयोजित समारोह में डॉ प्रहलाद, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं प्रणाली समेकन) ने अनावरण किया। मैक्सो कई प्रकार के मच्छरों के विरुद्ध कारगर है, यह डाई इथायल फिनाइल एसीटामाइड (डी ई पी ए) आधारित है तथा **मैक्सो मिलिट्री** एवं **मैक्सो सेफ एंड सॉफ्ट** नामक दो रूपों में उपलब्ध है। यह उत्पाद रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर, द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी पर आधारित है। डी ई पी ए आधारित युक्तियों का डी आर डी ई द्वारा 1986 में विकास किया गया तथा इनका उपयोग सैन्य सेवाओं द्वारा मच्छर-विरोधी स्प्रे के रूप में किया जाता रहा है। यह उत्पाद अब मैसर्स ज्योति प्रयोगशाला लिमिटेड के माध्यम से आम आदमी को उपलब्ध होगा। इस कंपनी द्वारा डी आर डी ओ से प्रौद्योगिकी हेतु लाइसेंस लिया गया है। यह उत्पाद डी आर डी ओ–फिक्की प्रौद्योगिकी वाणिज्यीकरण कार्यक्रम की देन है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 20 अन्य डी आर डी ओ प्रौद्योगिकियों के वाणिज्यीकरण के प्रयास भी किए जा रहे हैं। इस अवसर पर डॉ के शेखर, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एम एस एंड एल आई सी) तथा भूतपूर्व निदेशक, डी आर डी ई ने प्रौद्योगिकियों को प्रयोगशाला से बाजार में लाने को एक चुनौतीपूर्ण कार्य बताया। डॉ शेखर इस उत्पाद के विकास के शुरूआती चरण से इसमें संलग्न रहे हैं तथा आपने इसे द्रव्य रूप से स्प्रे के रूप में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की थी। इस अवसर पर डॉ राजीव कुमार, महानिदेशक, फिक्की ; डॉ विजयराघवन, निदेशक, डी आर डी ई, ग्वालियर ; श्री एस राधाकृष्णन, निदेशक, डी आई आई टी एम, डी आर डी ओ ; श्री एम पी रामचन्द्रन, सी एम डी, ज्योति प्रयोगशाला लिमिटेड़ ; श्री निरंकार सक्सेना, निदेशक, फिक्की ; तथा डी आर डी ओ, फिक्की एवं ज्योति प्रयोगशाला लिमिटेड़ के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

टैक्नोलॉजी फोकस का विमोचन

टैक्नोलॉजी फोकस के विशेष अंक के विमोचन का एक दृश्य।

टैक्नोलॉजी फोकस, डी आर डी ओ की द्विमासिक तकनीकी पत्रिका है। हल्के लड़ाकू वाहन प्रौद्योगिकियों के विशेष अंक का ऐरो इंडिया 2011 के दौरान आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में रक्षा राज्य मंत्री डॉ एम एम पल्लव राजू द्वारा विमोचन किया गया। इस अवसर पर माननीय रक्षा मंत्री, श्री ए के एंटनी ; रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास एवं महानिदेशक, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन डॉ वी के सारस्वत ; श्री प्रदीप कुमार, रक्षा सचिव ; डॉ प्रहलाद, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं प्रणाली समेकन) तथा निदेशक, सेमीलेक भी मंच पर उपस्थित थे। टैक्नोलॉजी फोकस का यह अंक भारत द्वारा विकसित हल्के लड़ाकू विमान तेजस की प्रौद्योगिकी पर आधारित था। टैक्नोलॉजी फोकस का प्रकाशन रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली द्वारा किया जाता है।

डी आर डी ओ तथा एन पी एस के मध्य समझौता

डी आर डी ओ तथा नौसेना स्नातकोत्तर विद्यालय (एन पी एस), अमेरिका, के मध्य शिक्षा तथा शोध की संभावनाओं को खोजने के लिए समझौता ज्ञापन पर 03 फरवरी 2011 को डी आर डी ओ भवन, नई दिल्ली, में हस्ताक्षर हुए हैं। डी आर डी ओ की ओर से रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ वी के सारस्वत तथा एन पी एस की ओर से वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) डेनियल ओलिवर, अध्यक्ष, एन पी एस ने हस्ताक्षर किए। इनके अनुसार शिक्षा/डिग्री कार्यक्रमों, शिक्षकों तथा वैज्ञानिकों की आपसी भेंट, तथा संयुक्त शोध परियोजनाओं की संभावनाओं के अवसरों की पहचान की जाएगी।

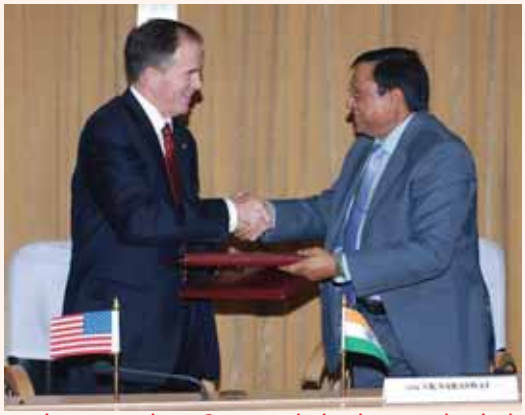

समझौता ज्ञापन से संबंधित दस्तावेजों को आपस में सौंपते हुए डेनियल ओलिवर तथा डॉ वी के सारस्वत (दाएं)

डी आर डी ओ स्वास्थ्य मेला

नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान, दिल्ली

इनमास स्वर्ण जयंती समारोह के रूप में, नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली एवं डी आर डी ओ महिला कल्याण मंच ने संयुक्त रूप से 07 फरवरी 2011 को डी आर डी ओ स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया। डॉ आर पी त्रिपाठी, निदेशक, इनमास ने इसका उद्घाटन किया। श्रीमती टी चन्द्र बानु, सचिव, महिला कल्याण मंच ने प्रतिभागियों को इस स्वास्थ्य मेले की आवश्यकता एवं उद्देश्य के बारे में बताया।

डी आर डी ओ स्वास्थ्य मेले के उद्घाटन अवसर पर मंचासीन डॉ आर पी त्रिपाठी, निदेशक, इनमास तथा डॉ राजीव विज, जनसम्पर्क अधिकारी, इनमास।

डॉ तरुण सेकरी के नेतृत्व में डॉक्टरों की एक टीम ने प्रतिभागियों को न केवल विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में जानकारी दी बल्कि उनके इलाज भी बताये। स्वास्थ्य मेले के सफलतापूर्वक आयोजन में जिन डॉक्टरों ने योगदान दिया, वे हैं, डॉ प्रदीप कुमार चुघ, कर्नल पी जे एस भल्ला, डॉ मंजु पोपली, डॉ मित्र बासु, डॉ रत्नेश सिंह कंवर, डॉ रीना विल्फ्रेड, डॉ रश्मि अग्रवाल, इत्यादि। डी आर डी ओ के 178 कार्मिकों ने अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ इस मेले में भाग लिया। अंत में डॉ राजीव विज, जनसम्पर्क अधिकारी, इनमास ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस 2011 में भागीदारी

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि ने 03–07 जनवरी 2011 के दौरान एस आर एम विश्वविद्यालय, चेन्नई, में भारतीय विश्वविद्यालयों में वैज्ञानिक अनुसंधान में गुणवत्ता शिक्षा एवं उत्कृष्टता पर आयोजित 98वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस प्रदर्शनी में भाग लिया तथा **भारत का गौरव** नामक प्रदर्शनी में अपने उत्पाद तथा प्रौद्योगिकियां प्रदर्शित कीं। इस प्रदर्शनी में डी आर डी ओ द्वारा लगाये गये पैवेलियन को वार्षिक प्रदर्शक का पुरस्कार प्रदान किया गया।

एन पी ओ एल पैवेलियन में गहरी रुचि लेते हुए विद्यार्थीगण।

पेटेंट अनुमोदित

भारतीय पेटेंट कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा **एन एयरइंडक्शन मैल्टिंग प्रोसेस फॉर प्रीप्रेशन ऑफ इंटरमेटेलिक एलॉय** (पेटेंट प्रलेख संख्या 242438) नामक विषय पर एक पेटेंट अनुमादित किया गया है। पेटेंट के आविष्कारक डॉ रचप्पा गुरासिदप्पा बालीगिडाड ; डॉ उज्ज्वल प्रकाश एवं श्री अटलूरी राधाकृष्ण, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद हैं।

सम्पदा प्रबंधन इकाई, दिल्ली

सम्पदा प्रबंधन इकाई (ई एम यू), दिल्ली में दिनांक 30 दिसंबर 2010 से 13 जनवरी 2011 तक **राजभाषा पखवाड़ा** का आयोजन किया गया। दिनांक 30 दिसंबर 2010 को इस इकाई के सम्पदा प्रबंधक, डॉ सुनील कुमार ने इसका उद्घाटन किया। उद्घाटन के अवसर पर इस इकाई के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। सम्पदा प्रबंधक ने अपने उद्घाटन उद्बोधन में सभी कर्मियों को संबोधित करते हुए उनसे हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने का अनुरोध किया तथा राजभाषा पखवाड़ा आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का एक दृश्य।

इस अवसर पर सम्पदा उप-प्रबंधक कर्नल यू के सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा राजभाषा अधिकारी डॉ (श्रीमती) सरोज द्वारा पखवाड़ा के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं की विस्तृत जानकरी दी गई। पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सम्पदा प्रबंधन इकाई परिवार के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभी प्रतियोगिताओं के लिए तीन-तीन पुरस्कारों की व्यवस्था की गई थी। दिनांक 13 जनवरी 2011 को राजभाषा पखवाड़े के समापन के अवसर पर श्री आर बी सिंह, निदेशक, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केन्द्र (सेपटेम), दिल्ली को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि ने सभी विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए तथा उनका उत्साहवर्धन किया।

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला, मैसूर

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूर में दिनांक 17–18 जनवरी 2011 को **रक्षा अनुसंधान विकास संगठन में राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार एवं उन्नतिः एक अवलोकन व भारतीय रक्षा सेनाओं की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु रक्षा अनुसंधान विकास संगठन की प्रयोगशालाओं में अनुसंधानात्मक अध्ययन** विषय पर एक दो-दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न रक्षा प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। संगोष्ठी का उद्घाटन डॉ कमल के जैन, परियोजना अधिकारी, क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, संस्कृति विभाग, मैसूर, ने किया और उन्होंने प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि इस प्रकार की संगोष्ठी के आयोजन से राजभाषा में वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्य करने हेतु प्रोत्साहन मिलता है। प्रयोगशाला के निदेशक

संगोष्ठी स्मारिका के विमोचन का एक दृश्य।

महोदय डॉ ए एस बावा ने इस अवसर पर संगोष्ठी स्मारिका का विमोचन किया एवं अपने अध्यक्षीय भाषण में अधिक से अधिक हिन्दी में काम करने का आह्वान किया और साथ ही संगोष्ठी आयोजन अधिकारियों को धन्यवाद दिया।

डॉ जी के शर्मा, वैज्ञानिक एफ एवं सम्पर्क हिन्दी अधिकारी ने दो-दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी के अवसर पर मंच पर आसानी सभी गणमान्य सज्जनों का पुष्प गुच्छों द्वारा स्वागत किया एवं उपस्थित सभी का स्वागत किया। संगोष्ठी को पांच सत्रों में बांटा गया, जिनमें 8 लेख राजभाषा से संबंधित एवं 28 विज्ञान से संबंधित लेख प्रस्तुत किये गये। संगोष्ठी का समापन श्रीमती भार्गवी आर गोपाल, हिन्दी अधिकारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र, दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उपसमिति द्वारा निरीक्षण की कार्रवाई का दृश्य।

दिनांक 14 फरवरी 2011 को रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली का संसदीय राजभाषा निरीक्षण समिति की पहली उपसमिति द्वारा निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण के दौरान पहली उपसमिति की ओर से श्रीमती पूनम जुनेजा, सचिव (समिति) तथा डॉ एल आर यादव, अवर सचिव, उपस्थित थे। रक्षा मंत्रालय की ओर से श्री उपमन्यु चटर्जी, संयुक्त सचिव (प्र.) एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, तथा श्री सोहन लाल जुगरान, उपनिदेशक (राजभाषा) ; डी आर डी ओ मुख्यालय की ओर से श्री जी इलंगोवन, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (आर) ; श्री सुनिल शर्मा, निदेशक, राजभाषा संगठन तथा पद्धति निदेशालय ; श्री राजेन्द्र प्रसाद, उपनिदेशक, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशाालय ; डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक ; श्री अशोक कुमार, अपर निदेशक, डेसीडॉक ; श्रीमती विनोद कुमारी शर्मा, वैज्ञानिक एफ, डेसीडॉक ; श्रीमती सुमति शर्मा, वैज्ञानिक ई, डेसीडॉक ; श्री फूलदीप कुमार, राजभाषा अधिकारी, डेसीडॉक, उपस्थित थे।

संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण के दौरान डेसीडॉक द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों की प्रदर्शनी।

निरीक्षण के दैरान संस्थान के निदेशक, डॉ अ ल मूर्ति ने संस्थान के राजभाषा हिन्दी कार्यकलापों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। डेसीडॉक द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले प्रकाशनों की भी एक प्रदर्शनी लगाई गई। माननीय सांसदों द्वारा डेसीडॉक द्वारा आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठियों की सराहना की गई तथा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु मार्गनिर्देश दिए गए। अंत में निदेशक, डेसीडॉक द्वारा माननीय सांसदों का निरीक्षण हेतु धन्यवाद प्रकट किया गया।

कार्मिक समाचार

नियुक्ति

डॉ अरविंद कुमार सक्सेना, वैज्ञानिक जी, को 01 जनवरी 2011 से प्रभावी नियुक्ति में रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर, का निदेशक नियुक्त किया गया है। आपने 1975 में लखनऊ विश्वविद्यालय से कार्बनिक रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि तथा 1980 में पी एच डी की उपाधि प्राप्त की। डॉ सक्सेना 28 अप्रैल 1984 को डी एम एस आर डी ई, कानपुर में सम्मिलित हुए। आपने कार्बनिक धात्विक रसायन के प्रमुख समूह 13, 14, तथा 15 के डेरीवेटिव्स के क्षेत्र में भागीरथी प्रयास किए। आपकी उपलब्धियों में सामरिक रूप से महत्वपूर्ण दो पदार्थों (1) पॉलीकार्बोसिलेन एस प्रिकसेर मैट्रीयल्स फॉर एस आई सी तथा मेटेलोसिलिकॉन कार्बाइड् सिरामिक फॉर अल्ट्रा हाई टैम्प्रेचर एप्लीकेशंस तथा (2) पॉलीफोसफाजीन इलासटोमर्स फॉर क्रायोजनिक एप्लीकेशंस का संश्लेषण शामिल हैं। इन पदार्थों के प्रतिरक्षा, वांतरिक्ष, तथा आण्विक उर्जा क्षेत्रों में अनेक उच्च प्रौद्योगिकीय उपयोग हैं। आप पांच उत्पादों के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए उत्तरदायी रहे हैं।

डॉ सक्सेना अनेक अकादमिक समितियों के सदस्य हैं। आप अतिसूक्ष्मदर्शी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी अकादमी तथा भारतीय पॉलीमर विज्ञान समिति, कानपुर-लखनऊ अध्याय के संस्थापक अध्यक्ष हैं। आपके नाम 60 शोध-पत्र तथा 08 पेटेंट हैं आपने अनेक संगोष्ठियों में भी अपने लगभग 40 शोध-पत्र प्रस्तुत किए हैं। आपको पॉलीफोस्फाजीन इलास्टोमर्स, सिरामिक प्रिकर्सर्स के संश्लेषण, एस आई सी फाइबर हेतु पॉलीडाईमिथाइलसिलेन तथा पॉलीकार्बोसिनेल के विकास के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हैं।

राष्ट्रीय अभिकल्पन पुरस्कार

श्री ओ आर नंदगोपान, वैज्ञानिक एफ, नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि, को यांत्रिक अभियांत्रिकी अभिकल्पन के क्षेत्र में किए गए उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए अभियंता संस्थान (भारत) द्वारा यांत्रिक अभियांत्रिकी में **राष्ट्रीय अभिकल्पन पुरस्कार** से सम्मानित किया गया है। श्री एस शर्मा, मत्स्य पालन मंत्री, केरल, ने दिनांक 17 दिसम्बर 2010 को कोच्चि में आयोजित 25वें भारतीय अभियांत्रिकी कांग्रेस में श्री नंदगोपान को यह पुरस्कार प्रदान किया।

श्री एस शर्मा, मत्स्य पालन मंत्री, केरल ; श्री ओ आर नंदगोपान को राष्ट्रीय अभिकल्पन पुरस्कार प्रदान करते हुए।

श्री ओ आर नंदगोपान ने जहाज-वाहित विंच से संबंधित यांत्रिक प्रणालियों एवं प्रौद्योगिकियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा प्रणाली एवं वायुवाहित विंच के लिए शैक्षिक एवं औद्योगिक साझीदारों के सहयोग से स्वदेशी अवयव विकास किया। आपने सोनार प्रणालियों के प्रचालन एवं रखरखाव के लिए भी अत्यधिक योगदान दिया।

उच्च अर्हता प्राप्ति

श्री रामदास चेन्नामसेट्टी, वैज्ञानिक डी, अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे, ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी) मद्रास, चेन्नई के यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग से अभियांत्रिकी में पी एच डी उपाधि प्राप्त की। आपके शोध का विषय **इंट्रेक्शन ऑफ लैम्ब वेव्स विद डिस्कंटीन्यूटीज इन कम्पोजिट स्ट्रक्चर्स** था।

वार्षिक दिवस समारोह

नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान, दिल्ली

नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली ने 13 फरवरी 2011 को अपना 50 वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर डॉ ए के वालिया, वित्त, योजना एवं ग्रामीण विकास, दिल्ली सरकार मुख्य अतिथि थे। साथ ही अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), दिल्ली ; डी आर डी ओ के मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास तथा निदेशक भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

डॉ त्रिपाठी, डॉ वालिया को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

डॉ आर पी त्रिपाठी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, एवं निदेशक, इनमास ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ वालिया ने अपने सम्बोधन में इनमास द्वारा विशेष रूप से थायराइड के क्षेत्र में वैज्ञानिक एवं सामाजिक योगदान तथा नॉन इनवेसिव इमेजिंग तथा रेडिएशन बायोलॉजी की महत्ता बताई। आपने इस बात की प्रशंसा की कि इनमास चिकित्सा तथा सैन्य बलों के कार्मिकों को रसायन, जैविकीय, रेडियोलॉजी एवं नाभिकीय रक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण के अपने कंधों पर अतिरिक्त जिम्मेदारी ले रहा है। इस अवसर पर डॉ वालिया ने बहुत से प्रकाशनों, रक्षा विज्ञान पत्रिका के विशेष अंक, **इनमास सार-संग्रह, न्यूक्लियस** (इनमास का समाचार-पत्र) इत्यादि का विमोचन किया तथा वैज्ञानिकों एवं अन्य कर्मियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए पुरस्कार प्रदान किए।

स्वर्ण जयंती समारोह

अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स), पुणे

अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे ने 09 फरवरी 2011 को आर एंड डी ई के लियोनार्डो द विंसी सभागार में अपने स्वर्ण जयंती समारोह की शुरूआत की। इस अवसर पर श्री एस सुंदरेश, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (ए सी ई) मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर श्री आर शंकर, निदेशक, समाघात वाहन एवं अभियांत्रिकी भी उपस्थित थे। श्री एन बी विजयकुमार, वैज्ञानिक जी, ने स्वागत सम्बोधन दिया। डॉ एस गुरूप्रसाद, निदेशक ने **ग्लोरिइस पास्ट फ्यूचर ब्राइट** नामक प्रस्तुति में आर एंड डी ई (इंजी) के पिछले पांच दशकों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। आपने भावी योजनाओं, चुनौतियों, एवं रणनीतियों पर भी प्रकाश डाला। स्वर्ण जयंती समारोह की गतिविधियों को भी बताया गया। इस अवसर पर प्रयोगशाला स्तर के विभिन्न पुरस्कार भी प्रदान किए गए। श्री एस सुंदरेश, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (ए सी ई) ने गृह पत्रिका **आर डी ई इनसाइट** के विशेष अंक का विमोचन किया। श्री वी वी पार्लीकर, वैज्ञानिक जी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

श्री एस सुंदरेश, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (ए सी ई) दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना, चांदीपुर

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर, द्वारा दिनांक 17–21 जनवरी 2011 के दौरान **बैलेस्टिक थ्योरी: एन ओवरव्यू** विषय पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को आधुनिक युद्धक प्रणालियां, आंतरिक उग्रवाद, तथा भविष्य की चुनौतियां, बंदूक प्रणोदन, रॉकेट प्रणोदन, प्रक्षेपास्त्र नियंत्रण, प्रक्षेपास्त्र प्रणोदन, मार्गदर्शन प्रणलियां, द्रव-प्रणोदकी, ट्रेजेक्ट्री अभिरूपण तथा अनुरूपण, इत्यादि से अवगत कराना था। पाठ्यक्रम के दौरान अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ; भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), खड़गपुर ; भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), कानपुर ; एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर ; तथा पी एक्स ई के विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए। श्री वी अंगुस्वामी, सह-निदेशक ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की तथा मेजर जनरल प्रवीण माथुर, निदेशक, ने समापन समारोह की अध्यक्षता की तथा प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए। डॉ ए के सन्निग्रही, वैज्ञानिक ई, पाठ्यक्रम निदेशक थे।

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला, मैसूर

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूर द्वारा दिनांक 17–29 जनवरी 2011 के दौरान वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों के लिए **आधारभूत गुणवत्ता आश्वासन तथा खाद्य प्रबंधन** विषय पर अल्पावधि पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। पाठ्यक्रम में आर्मी सप्लाई कोर की विभिन्न यूनिटों के कर्नल/लेफ्टिनेंट कर्नल स्तर के छह अधिकारियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम में विषय पर कक्षाओं के अलावा प्रायोगिक अभ्यास तथा औद्योगिक इकाइयों का भ्रमण भी शामिल था। पाठ्यक्रम के पश्चात् प्रतिभागियों ने विषय पर अपने ज्ञान के अद्यतन होने पर संतुष्टि व्यक्त की तथा इसे अपने दैनिक कार्यों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि ने 11–12 जनवरी 2011 के दौरान युवा वैज्ञानिकों के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्देश्य युवा वैज्ञानिकों को अपने क्षेत्र में अपने आलेख प्रस्तुत करने के लिए एक मंच उपलब्ध कराना था। इससे युवा वैज्ञानिकों के संचार एवं प्रस्तुति कौशल में बढ़ोत्तरी में सहायता मिलती है तथा विचारों का आदान-प्रदान होता है। श्री एस अनंत नारायण, निदेशक, एन पी ओ एल ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन में तीन सत्र थे, इलैक्ट्रॉनिक्स, इंजीनियरिंग एवं उत्पाद, ट्रांसड्यूसर एवं समुद्रविज्ञान। सम्मेलन में कुल 19 आलेख प्रस्तुत किए गए।

सम्मेलन के प्रतिभागीगण।

रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना, कानपुर

रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर, ने 07–11 फरवरी 2011 के दौरान **एस्पेक्ट्स ऑफ पॉलीमर रिओलॉजी एंड इट्स सिगनीफिकेंस** पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया। डॉ ए के सक्सेना, निदेशक, डी एम एस आर डी ई ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। पाठ्यक्रम में 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम का उद्देश्य पॉलीमर रिओलॉजी की अवधारणा तथा पॉलीमर प्रोसेसिंग से इसके संबंध से परिचित कराना था। आंतरिक एवं बाहरी वक्ताओं द्वारा 14 तकनीकी सत्रों में व्याख्यान दिए गए।

ओ पी सी डब्ल्यू प्रतिनिधिमण्डल का डी आर डी ई, ग्वालियर दौरा

रसायनिक शस्त्र निरोध संगठन (ओ पी सी डब्ल्यू), नीदरलैंड, के प्रतिनिधिमण्डल ने 13 जनवरी 2011 को भारत का दौरा किया। इसमें श्री अहमद उजुमकु, महानिदेशक तथा नील्स जोहान रिचर्ड एकवल कैबिनेट प्रमुख शामिल थे। इस अवसर पर डॉ डब्ल्यू सेल्वामूर्ति, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (जैव विज्ञान) तथा डॉ नरेन्द्र कुमार, संयुक्त सचिव, राष्ट्रीय प्राधिकरण रसायनिक शस्त्र संधि, भारत सरकार, भी उपस्थित थे। डॉ आर विजयराघवन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर ने डी आर डी ई में चल रहे अनुसंधान कार्यों पर प्रकाश डाला। डॉ डी के दूबे, वैज्ञानिक एफ, तथा प्रमुख, वर्टोक्स प्रयोगशाला, डी आर डी ई, ने ओ पी सी डब्ल्यू की अर्हताओं को पूर्ण करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला। डॉ सेल्वामूर्ति ने डी आर डी ओ की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। डी आर डी ई की वर्टोक्स प्रयोगशालाा को ओ पी सी डब्ल्यू द्वारा रसायनिक युद्ध कारकों तथा उनसे संबंधित पर्यावरण से लिए गए रसायनों के विश्लेषण हेतु चिह्नित किया गया है।

डॉ सेल्वामूर्ति, डॉ नरेन्द्र कुमार, डी आर डी ई के निदेशक तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक ओ पी सी डब्ल्यू प्रतिनिधिमण्डल के साथ विचार–विमर्श करते हुए।

आई एन ए ई फेलोशिप

श्री जी सतीश रेड्डी, वैज्ञानिक जी तथा निदेशक, इनर्शीयल प्रणाली, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद, को प्रतिष्ठित भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी की फैलोशिप के लिए चुना गया है। आपको यह सम्मान लड़ाकू विमानों, प्रक्षेपास्त्रों, मानवरहित वाहनों जैसी राष्ट्र की सामरिक आवश्यकताओं हेतु मार्गदर्शन प्रणालियों तथा सह-प्रणालियों के अभिकल्पन, विकास, तथा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हेतु दिया गया है।

डी आर डी ओ मोनोग्राफ श्रृंखला–बायोएक्टिव ग्लासेज फॉर इम्पलांट एप्लीकेशंस

यह मोनोग्राफ **जैव चिकित्सकीय अनुप्रयोगों हेतु बायोएक्टिव गलासेज** के सिद्धांत, विकास तथा चलन पर प्रकाश डालती है। इसके पांच अध्यायों ने जैव पदार्थों के गुणधर्म तथा ढांचे, बायोएक्टिव ग्लासेज के संश्लेषण के विभिन्न तरीकों, तथा विशेष वर्णन तकनीकों पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई है। इसमें बायोएक्टिव ग्लासेज के अनेक अनुप्रयोगों तथा गलास सिरामिकों पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के लेखक डॉ वी राजेन्द्रन तथा कर्नल (डॉ) एस के भंडारी हैं। इसका प्रकाशन रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), डी आर डी ओ, दिल्ली, द्वारा किया गया है। मूल्य– 260 रुपये, आई एस बी एनः 81–86514–31–3

औषधि विकास बैठक

डॉ आर पी त्रिपाठी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, एवं निदेशक, इनमास के साथ बैठक में आये प्रतिभागीगण।

नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, डी आर डी ओ की एकमात्र ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें रक्षा अनुप्रयोगों हेतु नवीन औषिधिय विकास का कार्य चल रहा है। इनमास में विकिरण जैव विज्ञान के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है। पिछले एक दशक से इनमास रक्षा सेवाओं हेतु 'सुगठित औषधि विकास कार्यक्रम' चला रहा है। यह कार्यक्रम नाभिकीय औषिधि विभाग द्वारा चलाया जा रहा है जिसे रेडियो फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्र में 40 वर्ष तक अनुभव प्राप्त है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 30 नवीन जैव चिकित्सकीय उत्पाद (उपकरण तथा औषधि) का विकास किया जा चुका है। ये औषधियां चिकित्सकीय परीक्षणों के द्वितीय एवं तृतीय चरणों में हैं, जिनके मानव परीक्षण चल रहे हैं। ये औषधियां स्वांस रोगों संबंधी, गैस्ट्रोइंटस्टाइनल, तथा आपातकालीन उपचार हेतु विकसित की गई हैं। सस्ती नाभिकीय औषधियों के विकास के लिए औषधि विकास, पर्यवेक्षण, तथा गुणवत्ता आश्वासन की प्रक्रियाएं निर्धारित की गईं हैं। इनमास में फार्माकोस्किनटीग्राफी नामक तकनीक के द्वारा औषधि विकास कार्यक्रम किया जा रहा है जो कि भारत में अपनी तरह का प्रथम प्रयास है।

इनमास द्वारा भारतीय औषधि उद्योग–इनमास की बैठक का आयोजन 28 जनवरी 2011 को किया गया। बैठक का उद्देश्य इनमास द्वारा विकसित जैव चिकित्सकीय उत्पादों का प्रदर्शन, वर्तमान में जारी परियोजनाओं के बारे में बताना, तथा स्किनटीग्राफी प्रौद्योगिकी के वाणिज्यिक तथा शोध पहलुओं पर विचार-विमर्श करना था। बैठक के दौरान प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा संयुक्त विकास परियोजनाओं की संभावनाओं पर विचार-विमर्श हुआ। औषधि उद्योग के लगभग 50 वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

डी आर डी ओ पर्वतारोहण अभियान

डी आर डी ओ के पर्वतारोहियों द्वारा सहयाद्री पर्वत श्रृंखला की रतनगढ़ स्थित सबसे ऊंची चोटी पर पर्वतारोहण किया गया। इसमें डी आर डी ओ के 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसका आयोजन वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर के साहसी क्लब द्वारा 08–09 जनवरी 2011 के दौरान किया गया।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

वायुवाहित प्रणाली केंद्र, बैंगलूरू

08 फरवरी 2011 : माननीय रक्षा राज्य मंत्री, डॉ एम एम पल्लम राजू।

कैब्स में भ्रमण के दौरान अतिथि पुस्तिका पर हस्ताक्षर करते हुए माननीय रक्षा राज्य मंत्री।

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना, बैंगलूरू

22 फरवरी 2011 : एयर वाइस मार्शल डी के पांडे, विशिष्ट सेवा मेडल, ए ओ ई एस एच क्यू एम सी, भारतीय वायु सेना ।

एयर वाइस मार्शल पांडे, डेयर की एम एस डब्ल्यू एस प्रयोगशाला का निरीक्षण करते हुए।

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र, बैंगलूरू

21 जनवरी 2011 : एयर वाइस मार्शल एन बी सिंह, विशिष्ट सेवा मेडल, ए सी ए एस एस आई जी एवं आई टी।

एयर वाइस मार्शल एन बी सिंह, केयर के निदेशक के साथ विचार-विमर्श करते हुए।

12 जनवरी 2011 : श्री एस सुंदरेश, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (ए सी ई) अध्यक्ष; श्री पी शिवकुमार, निदेशक, सी वी आर डी ई एवं ब्रिगेडियर टी एस ए नारायण, कमांडेंट एस डी डी एम सी ई एम ई।

सी डी आर समिति को रोबोटिक के बारे में बताते हुए केयर का रोबोटिक समूह।

ISSN 0971-4405

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

04 जनवरी 2011 : माननीय श्री शेखर दत्त, राज्यपाल, छत्तीसगढ़।

माननीय श्री शेखर दत्त, राज्यपाल, छत्तीसगढ़ को एन पी ओ एल की गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है।

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

27 जनवरी 2011 : वाइस एडमिरल डी के दिवान, अति विशिष्ट सेवा मेडल, उप प्रमुख, नौसेना।

वाइस एडमिरल डी के दिवान, अति विशिष्ट सेवा मेडल, उप प्रमुख, नौसेना को एन पी ओ एल की गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है।

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान, दिल्ली

04 जनवरी 2011 : मेजर जनरल (डॉ) टी एस हांडा, सेवा मेडल, एम जी जी एस (डॉक्ट्राइन) ए आर टी आर ए सी।

श्री एच वी श्रीनिवास राव, निदेशक, ईसा ; मेजर जनरल हांडा का स्वागत करते हुए।

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान, दिल्ली

17 फरवरी 2011 : वाइस एडमिरल सतीश सोनी, अति विशिष्ट सेवा मेडल, एन एम, नौसेना प्रमुख के ओ एस डी।

वाइस एडमिरल सतीश सोनी नौसेना अनुरूपण परियोजनाओं में गहरी रुचि दिखाते हुए।

मुख्य सम्पादक
डॉ अ ल मूर्ति

सह-मुख्य सम्पादक
शशी त्यागी

सम्पादक
फूलदीप कुमार

सम्पादकीय सहायक
अशोक कुमार

मुद्रण
एस के गुप्ता
हंस कुमार

विपणन
आर पी सिंह

डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23902500 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in